हमारा जॉन

कहानीः वेरॉनीक वैं दाँ अबील
चित्रः एम्मा द वू

CBSE Recommended

एकलव्य

सभी "जॉन" और उनके माता-पिताओं को,
- वी. वीडीए.

जे-एम.टी. को,
- ए. डीडब्ल्यु.

हमारा जॉन
HAMARA JOHN
कहानीः वेरॉनीक वैं दाँ अबील
चित्रः एम्मा द वू
अँग्रेज़ी से अनुवादः अमित

Originally published as 'Notre Jean'
by Mijade Publications
Text © 2009 Véronique Van den Abeele
Illustrations © 2009 Emma de Woot
हिन्दी अनुवाद © 2011 एकलव्य

संस्करणः मार्च 2011 / 5000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2014 / 3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रणः मई 2016 / 3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रणः नवम्बर 2017 / 3000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रणः जून 2019 / 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 300 gsm पेपरबोर्ड बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-79252-75-8
मूल्यः ₹ 75.00

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

प्रकाशकः ज्योत्स्ना प्रकाशन
430-31, शनिवार पेठ, पुणे - 411030
ज्योत्स्ना प्रकाशन द्वारा केवल एकलव्य के लिए प्रकाशित

प्रकाशकः **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोनः +91 755 - 297 7770, 71, 72, 73
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल फोनः +91 755 2687 589

हमारा जॉन

कहानीः वेरॉनीक वैं दाँ अबील
चित्रः एम्मा द वू

एकलव्य

बसन्त की एक सुहानी सुबह
तलैया की ओर जाते हुए
जॉन-लक बतख को मैदान के बीचों-बीच
एक खूबसूरत सफेद अण्डा दिखाई दिया:
"ओह अण्डा! प्यारा अण्डा!"

अपनी इस खोज से उत्साहित
उसने अपनी दोस्त गुर्गी मुर्गी को पुकारा:
"आकर देखो गुर्गी, मुझे एक अण्डा मिला है।"

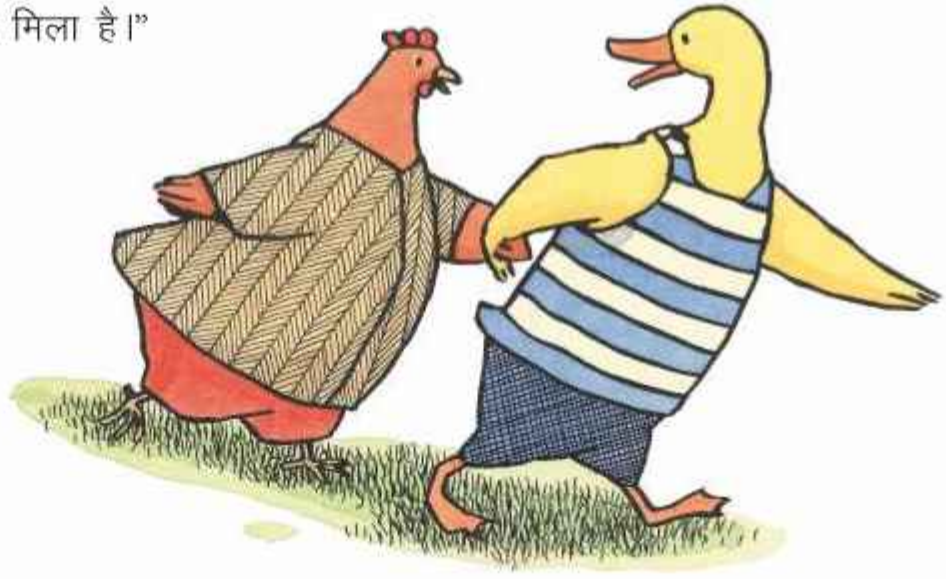

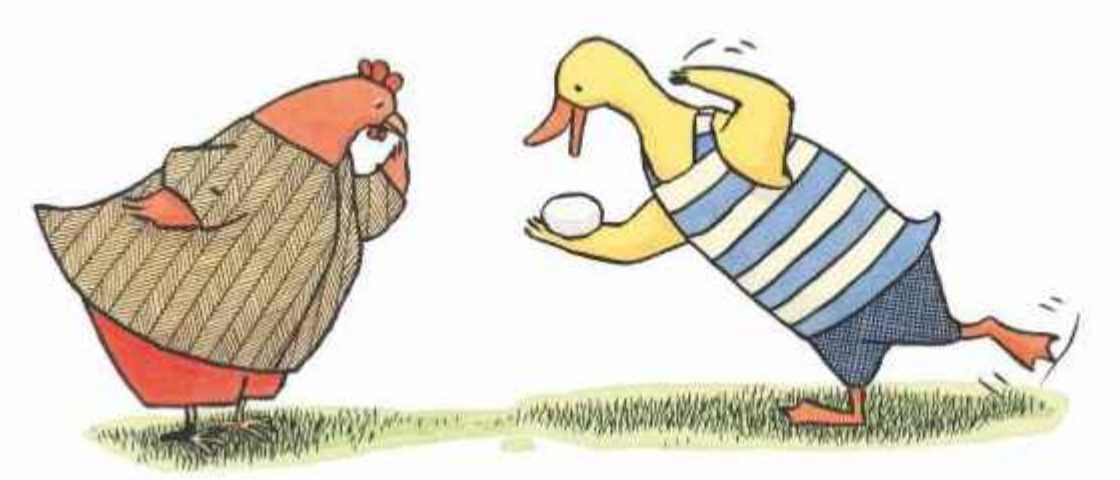

"देखो गुर्गी! यह बतख का अण्डा है! पता है, जब इसमें से बतख का नन्हा बच्चा निकलेगा तो मैं उसे तैरना सिखाऊँगा। वह एक महान तैराक बनेगा, बिलकुल मेरी तरह!"

गुर्गी मुर्गी हैरान हो गईः "बतख का अण्डा? यह? कुडुक... कुडुक... कुडुक... हो ही नहीं सकता! यह ज़रूर किसी मुर्गी का है, जो यहाँ से गुज़री होगी..." वह खयालों में खो गईः
"ओह! यह नन्ही-सी चूज़ी कितनी प्यारी होगी... मैं उसे सिखाऊँगी खूब सारे अण्डे देना, बिलकुल मेरी तरह!"

कुड़ुक-कुड़ुक की आवाज़ सुनकर धवला बगुला वहाँ आ पहुँचा। उसने अपनी चोंच आगे बढ़ाई: "ओह, कितना खूबसूरत अण्डा है! ये किसी बगुली का अण्डा है! मैं इस छुटकू को एक अच्छा मच्छीमार बनना सिखाऊँगा, बिलकुल मेरी तरह!"

तभी गुल्लू उल्लू की नज़र अण्डे पर पड़ीः "हूऊ... हूऊ... अण्डा?
इसकी खोजबीन करनी होगी। और अगर इस अण्डे में से छोटा उल्लू निकला
तो उसे समझदार बनना मैं सिखाऊँगा, बिलकुल मेरी तरह!"

"ट्वीक..... ट्वीक.... टुर्र..... कतई नहीं!" अब्दुल बुलबुल ने चहचहाते हुए कहा।
"यह अण्डा थोड़ा बड़ा ज़रूर है, फिर भी हो सकता है कि इसमें से
एक छोटा बुलबुल निकले... उसे गवैया बनाने का ज़िम्मा मेरा है, बिलकुल मेरी तरह!"

अब फुल-टॉस अल्बैट्रॉस भी वहाँ पहुँच गया! वह अपनी छुट्टियाँ बिताने इस इलाके में आया था। "हैलो, हैलो, इस छोटू अल्बैट्रॉस को मैं उड़ना सिखाने वाला हूँ! यह बहुत ऊँची उड़ान भरेगा, बिलकुल मेरी तरह!"

एडवर्ड हमिंगबर्ड ने इस खटपट की आवाज़ सुनी। वह भी अपनी राय देना चाहता था: "चुक... चुक... चुक... चुक... और अगर यह हमिंगबर्ड होगी तो मैं उसे सिखाऊँगा कि फूलों का रस कैसे इकट्ठा किया जाता है, बिलकुल मेरी तरह!"

"चलो-हटो, एडवर्ड!" चितलदुर्ग शुतुरमुर्ग चिल्लाया। वह दौड़ते हुए उस जगह आ पहुँचा:
"मज़ाक मत करो? तुमने इस अण्डे का आकार देखा है?"

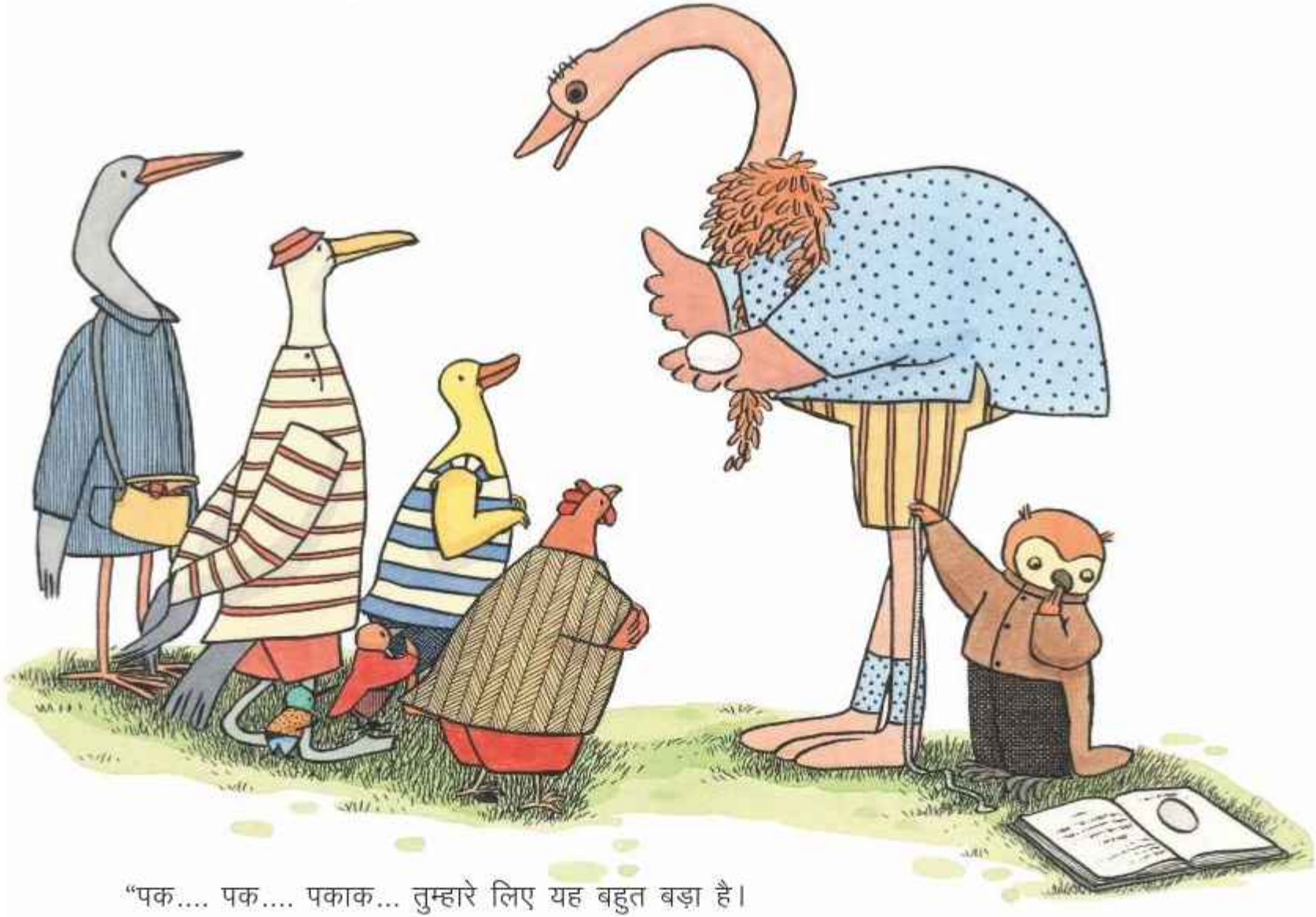

"पक.... पक.... पकाक... तुम्हारे लिए यह बहुत बड़ा है।
खैर, अगर छोटा शुतुरमुर्ग बाहर निकला, तो उसे यह सिखाने का ज़िम्मा
मेरा होगा कि तेज़ कैसे दौड़ा जाता है, बिलकुल मेरी तरह!"

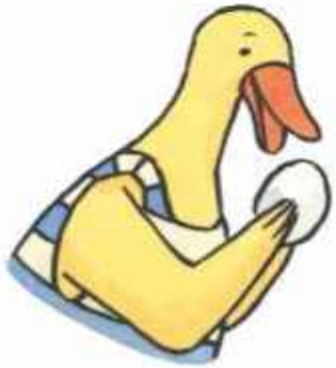

जॉन-लक को गुस्सा आ गयाः "बहुत हो गया।
आखिर यह अण्डा मुझे मिला था।"

"इसका मतलब है कि इसे मैं अपनाऊँगा!
मैं इसका पिता बनूँगा और इसे सब कुछ सिखाऊँगा।"

अब सभी पक्षियों का धीरज खत्म हो गया और वह
मैदान लड़ाई का मैदान बन गया। कैसा नज़ारा था!

चोंचें नोच रही थीं, पंख उड़-उड़कर हर ओर बिखर रहे थे:
"यह बतख का बच्चा होगा! नहीं, चूज़ी! नहीं, बुलबुल! नहीं, बगुला! नहीं, उल्लू!
नहीं, अल्बैट्रॉस! नहीं, हमिंगबर्ड! नहीं, शुतुरमुर्ग!"

"बन्द करो यह सब! वह देखो!" गुल्लू उल्लू चीखा।
"अण्डा तड़क रहा है... शायद इसमें से बच्चा निकलने वाला है!"

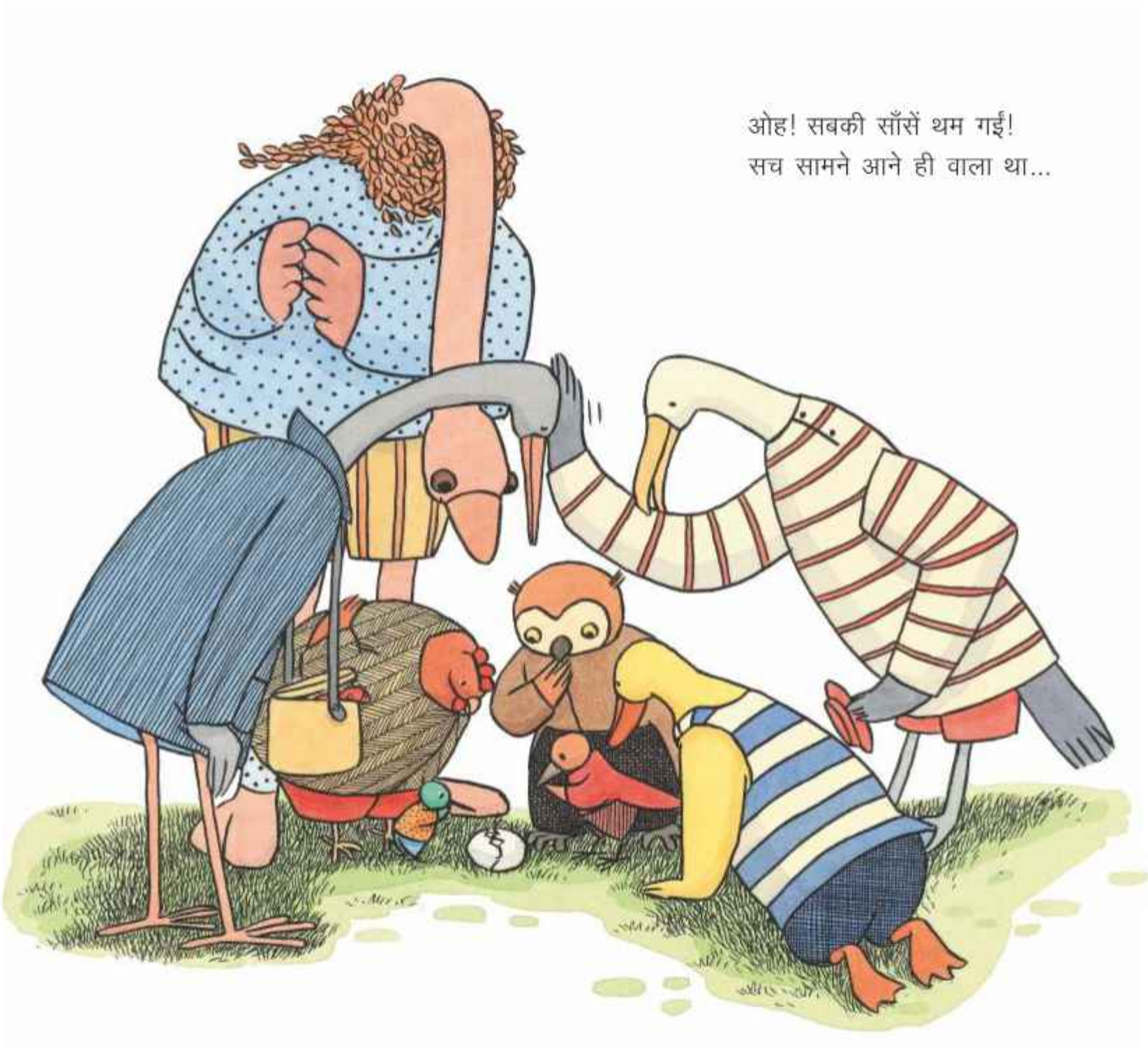

ओह! सबकी साँसें थम गईं!
सच सामने आने ही वाला था...

"आऽऽऽऽऽऽऽऽऽह! मग... मग.... मगर....
मगरमच्छ? ताज्जुब है!"

उस नन्हे बच्चे को देखकर जॉन-लक का दिल भर आया।
उसने उसे अपने पंखों में उठाया और सब पक्षियों से कहा, "घबराओ नहीं, यह सीधा-सादा लगता है।
कितने दुख की बात है कि इसकी देखभाल करने के लिए यहाँ कोई मगरमच्छ नहीं है...
अगर हम सब इसके माँ-बाप बन जाएँ तो कैसा रहेगा? दोस्तो, यह है हमारा... जॉन!"

शुरुआती अचम्भे से उबरने के बाद सभी उस प्यारे शिशु से
लाड़ करने लगे। सब अपनी आपसी तकरार भूल गए।
"हमारा जॉन! यह कितना प्यारा है!" सभी पक्षी चहक उठे।

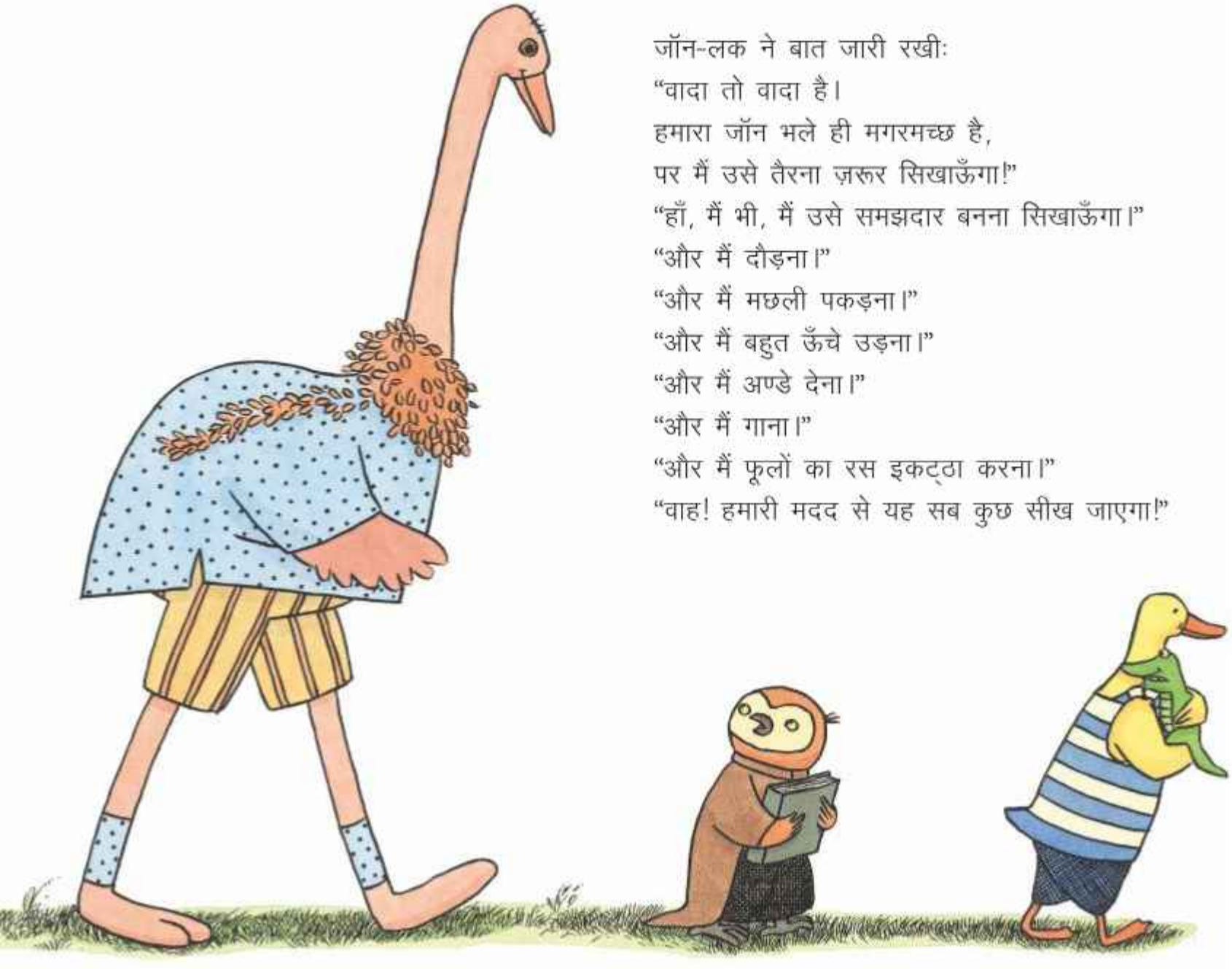

जॉन-लक ने बात जारी रखीः
"वादा तो वादा है।
हमारा जॉन भले ही मगरमच्छ है,
पर मैं उसे तैरना ज़रूर सिखाऊँगा!"
"हाँ, मैं भी, मैं उसे समझदार बनना सिखाऊँगा।"
"और मैं दौड़ना।"
"और मैं मछली पकड़ना।"
"और मैं बहुत ऊँचे उड़ना।"
"और मैं अण्डे देना।"
"और मैं गाना।"
"और मैं फूलों का रस इकट्ठा करना।"
"वाह! हमारी मदद से यह सब कुछ सीख जाएगा!"

इस शिशु मगरमच्छ का नाम "जॉन-स्वच्छ" रखा गया। फूलों का रस चूसना सीखने में उसे काफी वक्त लगा।

एडवर्ड हमिंगबर्ड की नकल उतारना आसान नहीं था!

और गाना सीखना भी कुछ कम कठिन न था।

जब अब्दुल बुलबुल उसे सरगम सिखाने की कोशिश करता तो सबको पता चल जाता!

जहाँ तक गुर्गी मुर्गी का सवाल था, उसने बहुत कोशिश की कि जॉन-स्वच्छ अण्डे देना सीख जाए...

...मगर नाकाम रही!!!

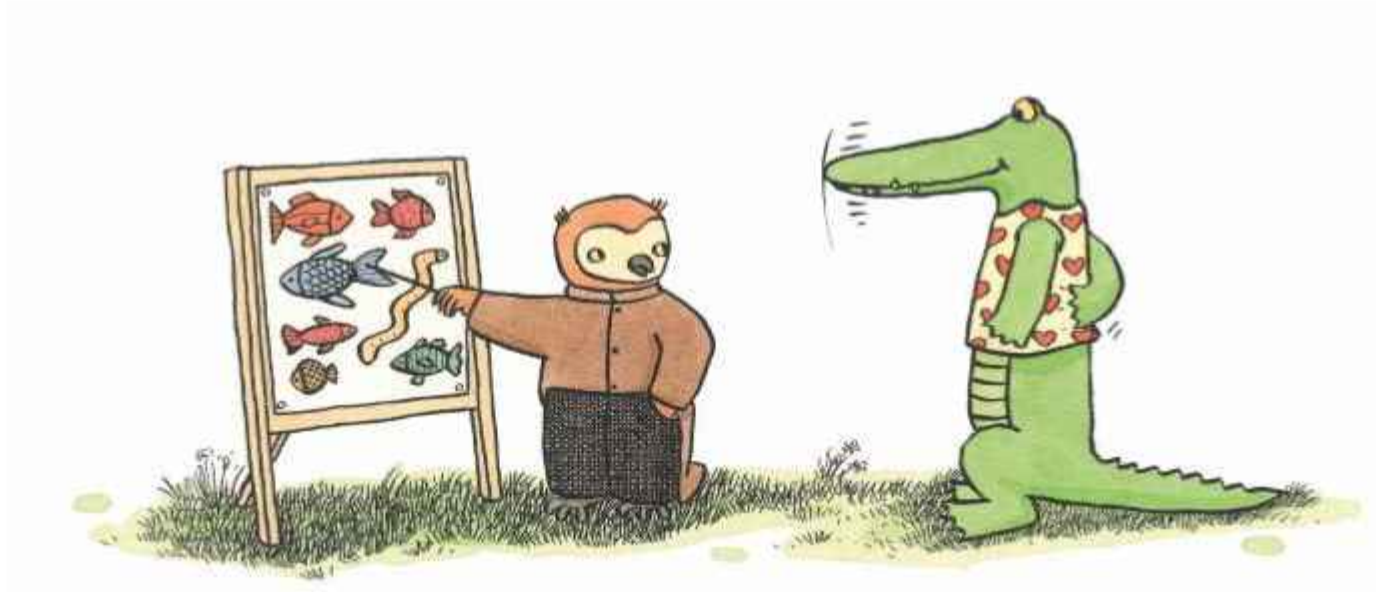

हालाँकि जॉन-स्वच्छ गुल्लू उल्लू से ज्ञानी बनने की शिक्षा बड़ी अच्छी तरह ले रहा था।
और धवला बगुला से मछली पकड़ना सीखने में तो वह और भी आगे था।

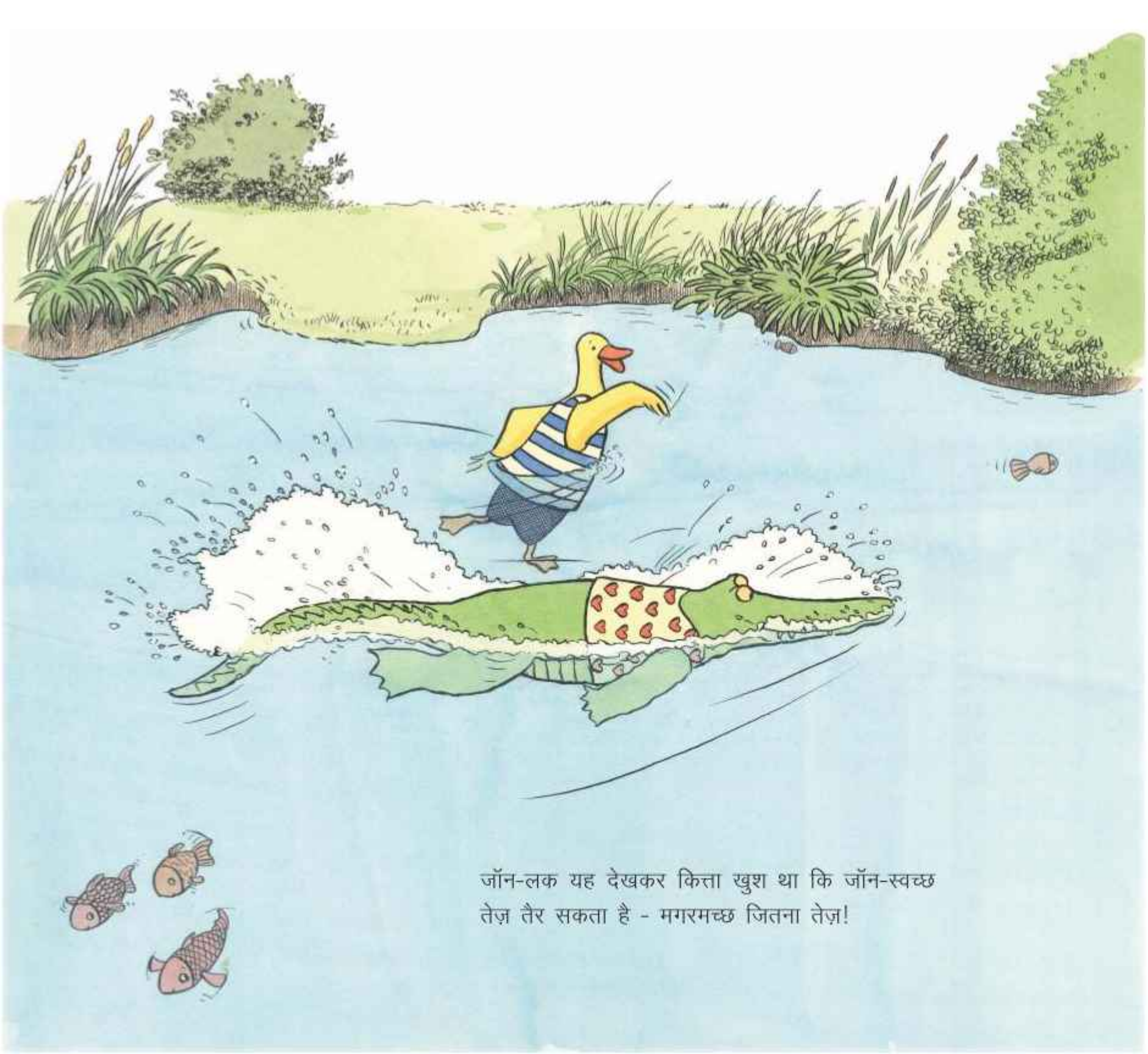

जॉन-लक यह देखकर कित्ता खुश था कि जॉन-स्वच्छ
तेज़ तैर सकता है - मगरमच्छ जितना तेज़!

मगर चितलदुर्ग शुतुरमुर्ग के साथ तो उसे
आराम का वक्त ही नहीं मिलता थाः
“एक, दो, एक, दो...
आओ... तेज़, और तेज़...
मुझे पकड़ने की कोशिश करो!”

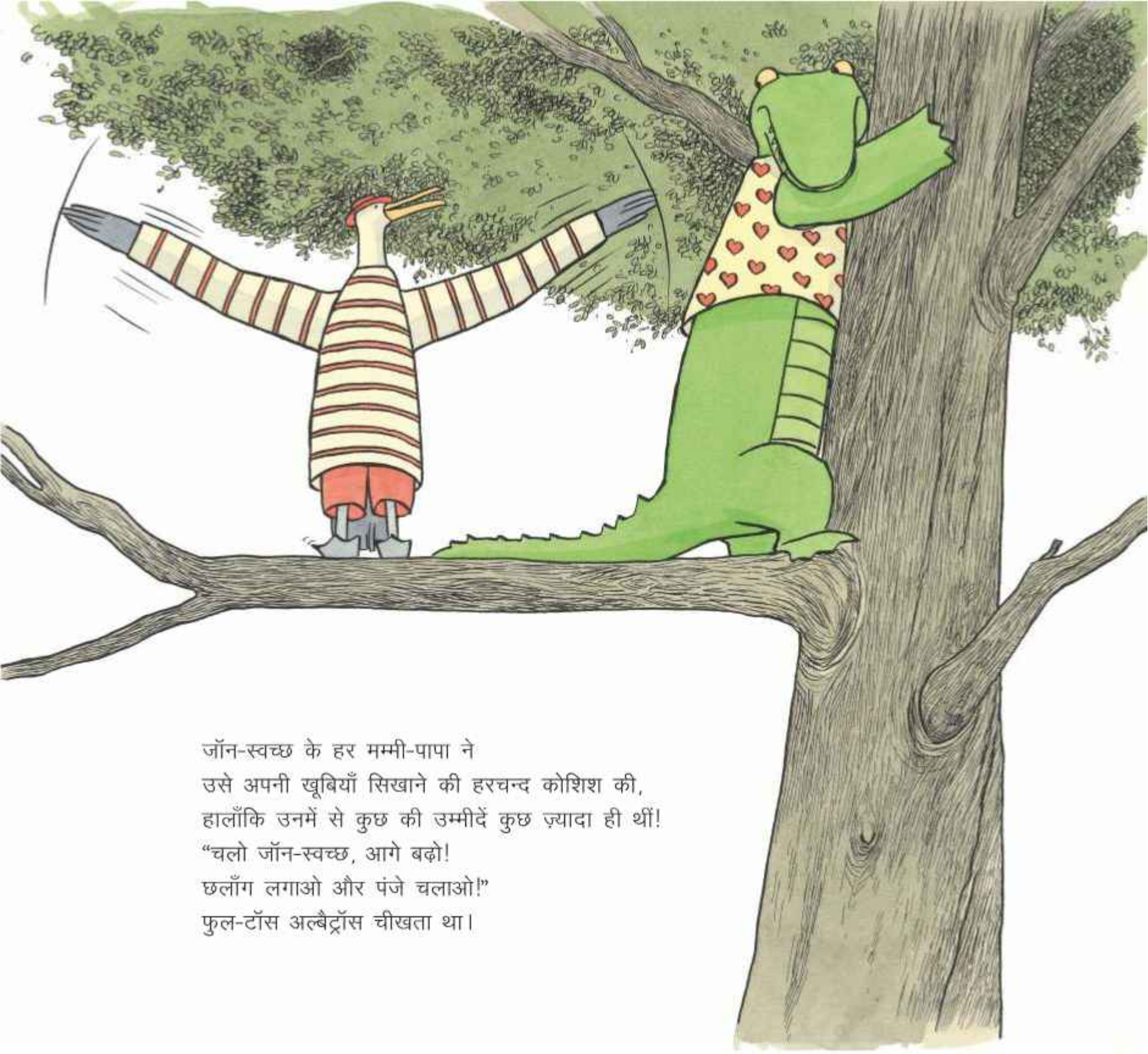

जॉन-स्वच्छ के हर मम्मी-पापा ने
उसे अपनी खूबियाँ सिखाने की हरचन्द कोशिश की,
हालाँकि उनमें से कुछ की उम्मीदें कुछ ज़्यादा ही थीं!
"चलो जॉन-स्वच्छ, आगे बढ़ो!
छलाँग लगाओ और पंजे चलाओ!"
फुल-टॉस अल्बैट्रॉस चीखता था।

गोद लेने वाले ऐसे स्नेही माँ-बापों के साथ जॉन-स्वच्छ मगरमच्छ ने
हर क्षेत्र में बहुत तरक्की की... तकरीबन!

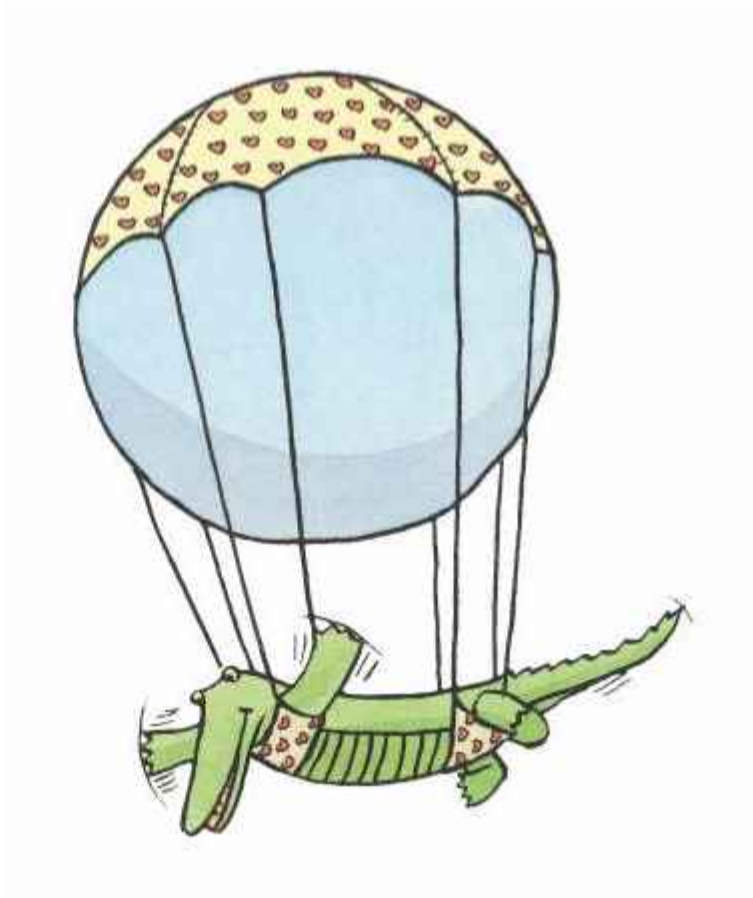

मगरमच्छ तो आखिर मगरमच्छ है।
भले ही जॉन-स्वच्छ को उड़ना पसन्द हो,
मगर वह उसकी खासियत नहीं है...
कम से कम अब तक तो नहीं!

parag

एकलव्य

मूल्य: ₹ 75.00

9 788179 252758